दिव्य लीलामृत

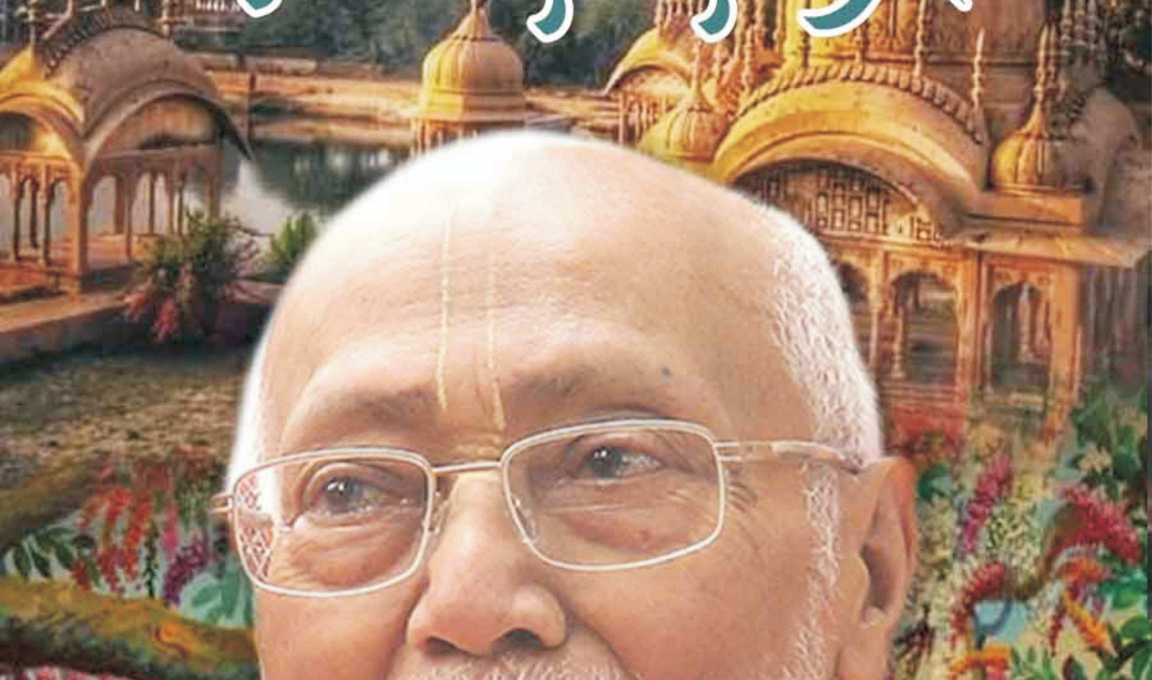

श्रीव्रजधाम में कार्तिक व्रत

श्रीश्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ
गोस्वामी महाराज जी

SGD

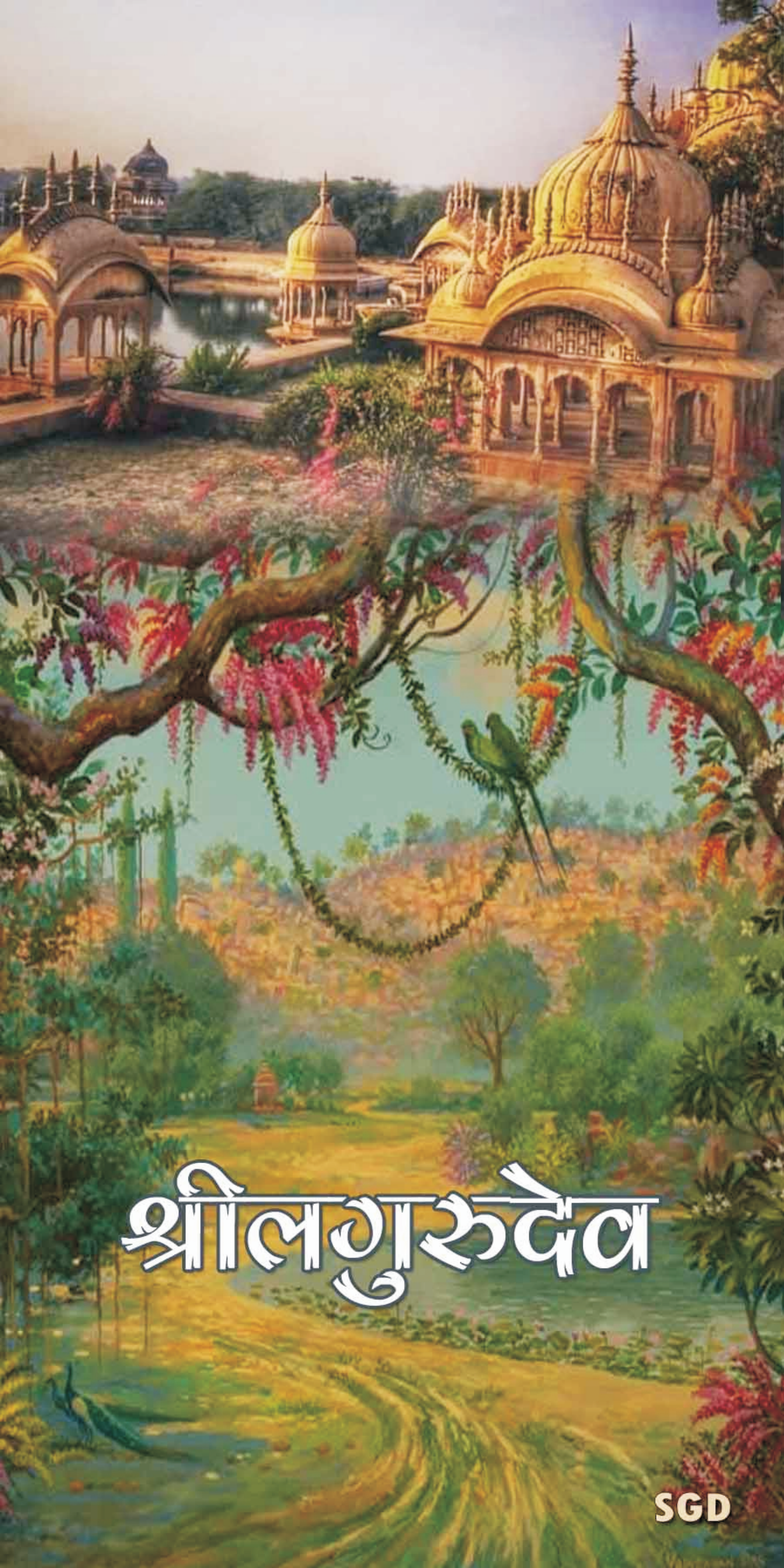

श्रीलगुरुदेव

SGD

श्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

श्री चैतन्य गौड़ीय मठ में, कार्तिक व्रत का पालन प्रति वर्ष अलग-अलग क्षेत्र में और प्रत्येक तीसरे वर्ष श्रीव्रज मंडल में किया जाता है। यह अवसर दुबारा वर्ष 2011 में आया। श्रील गुरुदेव लंबे समय से गोवर्धन में वास करने की प्रतीक्षा कर रहे थे, और अब उन्हें अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने का अवसर भी मिल गया। वे गोवर्धन में रहने के लिए दृढ़ संकल्प थे। वहाँ रहने की साधारण

सुविधाओं और बिजली–पानी की उचित व्यवस्था का अभाव होने पर भी उनका संकल्प नहीं बदला। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि यदि उन्हें गोवर्धन में अपना शरीर छोड़ना भी पड़ जाए, तो यह उनके लिए स्वीकार्य है। यदि हम उन्हें वहाँ जाने से रोकने का प्रयास कर भी लेते, तो भी हम निश्चित रूप से सफल नहीं हो पाते, क्योंकि उन्होंने अपने इस निर्णय को 6 महीने पहले ही व्यक्त कर दिया।

श्रील गुरुदेव अक्टूबर के

पहले सप्ताह में गोवर्धन पहुँचे। वहाँ रहते समय, उन्होंने कई भाग्यशाली भक्तों को शारीरिक और मानसिक रूप से सेवा में संलग्न कर, उनकी लीला में सहायक बनने का अमूल्य अवसर प्रदान किया। उन्होंने नियमित रूप से भक्तों को दर्शन दिया, और प्रत्येक अवसर पर गोवर्धन का महिमा-कीर्तन किया। एक दिन, गोवर्धन की परिक्रमा के समय, उन्होंने गिरिराज की पूजा की, श्रीमाधवेन्द्र पुरीपाद के स्थान, श्रीगोविंद-कुंड, श्रीराधाकुंड,

श्रीश्याम-कुंड और अन्य-अन्य स्थानों के दर्शन किए, और श्रीराधा-कुंड के पवित्र जल से आचमन कर कुंड की पूजा भी की। परिक्रमा के मार्ग में उन्होंने कई बार श्रीकृष्ण की गोवर्धन धारण लीला का वर्णन किया।

कुछ दिनों के बाद, श्रीगिरिधारी पंडा के निमंत्रण पर श्रील गुरुदेव कुछ भक्तों के साथ उनके स्थान पर गए। संकीर्तन के बाद उन्होंने पंडाजी के अनुरोध पर उनके घर पर प्रसाद ग्रहण किया। पंडाजी के बोलने पर उनके

रजिस्टर में श्रील गुरुदेव ने ये स्नेह भरे कुछ शब्द लिखे, “बहुत लंबे समय के बाद मुझे श्रीगिरिधारी पंडाजी से मिलने का अवसर मिला। मैं आपका आभारी हूँ। कृपया गिरिराज महाराज से मेरे लिए प्रार्थना कीजिए।”

एक दिन, श्रील गुरुदेव ध्रुव टीला गए। उस स्थान पर सत्ययुग में पाँच वर्ष के बालक, राजकुमार ध्रुव, ने भगवान् श्रीहरि के दर्शन प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी। पहले श्रील गुरुदेव ध्रुव टीला की तलहटी में

स्थित मधुवन के श्रीगौड़ीय सेवाश्रम में गए, और वहाँ पर उन्होंने पूरी तन्मयता के साथ ध्रुव के जीवन चरित्र का वर्णन किया। भाव-विभोर अवस्था में उनकी वाणी बार-बार रुद्ध हो जाने के कारण उनके लिए ठीक से हरिकथा बोल पाना भी कठिन हो गया था। उनके दिव्य नेत्रों से लगातार अश्रु की धारा प्रवाहित होती रही और अप्राकृत भावों के उमड़ने के कारण उनके दिव्य शरीर में अनेक चिन्मय विकार दिखलाई दिए। उस समय वहाँ

एकत्रित सभी भक्तों को भी अपनी आँखों से बार-बार आँसुओं को पोंछते हुए देखा गया, भले ही वे उनकी भाषा को समझ ना पाए हो। वहाँ का वातावरण आध्यात्मिक स्पंदनों से सराबोर था। यह एक अलौकिक अनुभव था, जो इस जगत् के शब्दों के द्वारा अवर्णनीय है।

शीघ्र ही, सभी भक्त ध्रुव टीला की ओर यात्रा में श्रील गुरुदेव के पीछे हो गए। उस स्थान पर उनकी एक अद्भुत लीला ने सभी भक्तों को आश्चर्य

चकित कर दिया। उस क्षण से पहले किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि उन्हें सत्य-युग के पांच वर्ष के राजकुमार ध्रुव की भगवान् के दर्शन के लिए तीव्रता और उत्साह इस कलियुग में प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिलेगा, और वह भी 88 वर्ष की आयु के श्रील गुरुदेव के माध्यम से। श्रील गुरुदेव, कमल की पंखुड़ियों के समान नेत्रों वाले भगवान् श्रीहरि के दर्शन के लिए बड़े ही उत्साह, उल्लास और स्फूर्ति से एकदम सीधी खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ने लग

गए। हम उन्हें कुर्सी में बैठाकर ऊपर ले जाने के लिए प्रस्तुत थे, किन्तु उन्होंने मना कर दिया। उन्हें सीधी और कठिन सीढ़ियों को इतनी सहजता से चढ़ते हुए देखकर सभी अचम्भित हो गए। श्रीहरि के दर्शन के लिए उनकी यह तीव्र तृष्णा, कुछ समय पहले उनके द्वारा बोली गई हरिकथा में ही झलक गई थी। पहाड़ी पर ध्रुव-नारायण के दर्शन के बाद, भक्तों ने कीर्तन किया। इस लीला के द्वारा उन्होंने यह शिक्षा दी कि दृढ़ता और निष्कपटता से

हरिभजन करनेवालों के लिए किसी भी प्रकार की शारीरिक दुर्बलता या वृद्ध-आयु बाधा नहीं बन सकती।

मधुवन से, श्रील गुरुदेव कुमुदवन गए और वहाँ मठ में प्रसाद ग्रहण कर गोवर्धन लौट आए। उन्होंने गोवर्धन में अपने एक मास के निवास के समय में कई भजन-इच्छुक व्यक्तियों को कृष्ण-नाम और कृष्ण-मंत्र में दीक्षित किया। गोकुल महावन में, उन्होंने श्रीकृष्ण की अति रमणीय बाल्य-लीलाओं का वर्णन किया।

उस समय, वे पूरी तरह से उनमें ही डूबे हुए दिखाई दिए। मुझे तो ऐसा अनुभव हो रहा था कि उन लीलाओं का वर्णन करते समय वे चिन्मय धाम में उनको प्रत्यक्ष रूप से दर्शन कर रहे थे ।

कार्तिक व्रत के अंत में, श्री चैतन्य गौड़ीय मठ, वृंदावन में श्रील गुरुदेव का शुभ आगमन हुआ। वहाँ पर उन्होंने नित्य-लीला-प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद 108 श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज की 108वीं आविर्भाव तिथि का बहुत

श्रद्धा के साथ पालन किया। बड़ी संख्या में व्रज के साधु, ब्राह्मण, विभिन्न गौड़ीय मठों के संन्यासी, ब्रह्मचारी और गृहस्थ भक्तों ने इस उत्सव में भाग लिया। श्रील गुरुदेव के कई गुरु-भाई और शिष्य भी इस अनुष्ठान में उपस्थित हुए। उस दिन, श्रील गुरुदेव ने श्रील परमगुरुदेव के श्रीविग्रह को प्रकाशित किया, जिनकी सेवा-पूजा आज भी जालंधर मठ में सुन्दर रूप से हो रही है। इसके बाद उन्होंने श्रील परमगुरुदेव के जीवन चरित्र का

वर्णन किया, जो सभी के लिए बहुत ही प्रेरणादायक है। उन्होंने कहा कि उनके गुरुदेव ने अपने पूरे जीवन में, केवल श्रील प्रभुपाद और उनके गुरुवर्ग के द्वारा दिखाए गए मार्ग का ही अनुसरण किया और उनकी इच्छाओं के अनुसार अपना जीवन निर्वाह किया। श्रील गुरुदेव ने यह भी बताया कि श्रील परमगुरुदेव ने अपने गुरु-भाईयों की प्रीति-युक्त सेवा (सतीर्थ-प्रीति) कर, वास्तविकता में श्रील प्रभुपाद की मनोभीष्ट सेवा की,

इस प्रकार उन्होंने गुरु सेवा का एक आदर्श दृष्टान्त स्थापित किया।

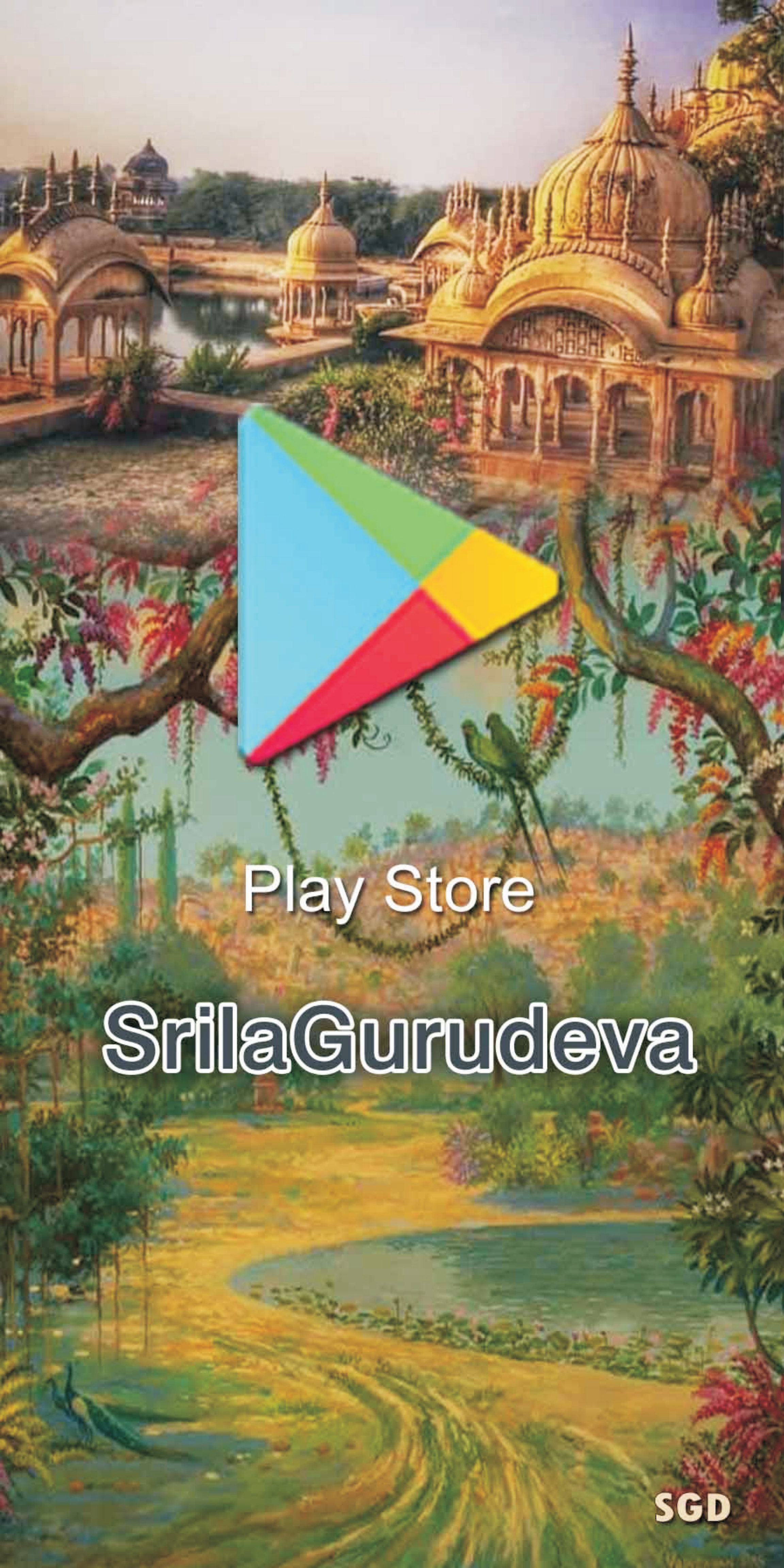
Play Store
SrilaGurudeva
SGD